ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 8, August 2017

गुटनिरपेक्षता: अर्थ, स्वरूप एवं प्रासंगिकता

Dr. Vinay Kumar Pinjani

Lecturer in Political Science, Babu Shobha Ram Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan, India

सार

गुटनिरपेक्षता का सरल अर्थ है कि विभिन्न शक्ति गुटों से तटस्थ या दूर रहते हुए अपनी स्वतन्त्र निर्णय नीति और राष्ट्रीय हित के अनुसार सही या न्याय का साथ देना। आंख बंद करके गुटों से अलग रहना गुटनिरपेक्षता नहीं हो सकती। गुटनिरपेक्षता का अर्थ है - सही और गलत में अन्तर करके सदा सही नीति का समर्थन करना। गुट निरपेक्ष आंदोलन (NAM) राष्ट्रों की एक अन्तरराष्ट्रीय संस्था है, जिहोंने निश्चय किया है, कि विश्व के वे किसी भी पावर ब्लॉक के संग या विरोध में नहीं रहेंगे। यह आन्दोलन भारत के प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू, मिस्र के पूर्व राष्ट्रपति गमाल अब्दुल नासिर व युगोस्लाविया के राष्ट्रपति टीटो, इंडोनेशिया के राष्ट्रपति डाॅ सुक्रणों एवं घाना - क्रामें एन्क्रूमा का आरम्भ किया हुआ है। इसकी स्थापना अप्रैल,1961में हुई थी। और 2012 तक इसमें 120 सदस्य हो चुके थे। SARHETA GHOSNA-1979 के अनुसार इस संगठन का उद्देश्य गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, सार्वभौमिकता, क्षेत्रीय एकता एवं सुरक्षा को उनके साम्राज्यवाद, औपनिवेशिकवाद, जातिवाद, रंगभेद एवं विदेशी आक्रमण, सैन्य अधिकरण, हस्तक्षेप आदि मामलों के विरुद्ध उनके युद्ध के दौरान सुनिश्चित करना है। इसके साथ ही किसी पावर ब्लॉक के पक्ष या विरोध में ना होकर निष्पक्ष रहना है। ये संगठन संयुक्त राष्ट्र के कुल सदस्यों की संख्या का लगभग 2/3 एवं विश्व की कुल जनसंख्या के 55% भाग का प्रतिनिधित्व करता है। खासकर इसमें तृतीय विश्व यानि विकासशील देश सदस्य हैं।

परिचय

भारतीय स्वतंत्रता के बाद के आरंभिक दो दशकों में जबकि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति शीत युद्ध (US-USSR) के गहन प्रभाव में थी और उसकी दशा-दिशा तय कर रही थी, भारत की विदेश नीति वृहत रूप से ‘गुटनिरपेक्षता की नीति’ से प्रेरित थी जो बाद में वर्ष 1961 में गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non Alignment Movement- NAM) के रूप में एक पूर्ण आंदोलन और विचार मंच बनकर उभरी।लेकिन आज भारत गुटनिरपेक्षता के बजाय एक बहुपक्षीयता या बहु-संरेखण (Multi-alignment) की राह पर कुशलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है जहाँ एक ओर वह चीन या रूस के नेतृत्व वाले ब्रिक्स (BRICS) और शंघाई सहयोग संगठन (SCO) का सदस्य है तो दूसरी ओर अमेरिका के नेतृत्व वाले चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (Quad) में जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ शामिल है।[1]बहु-संलग्नता की इस व्यवहार्यता को समझने के लिये हमें पहले इतिहास के कुछ पन्ने पलटते हुए गुटनिरपेक्षता के दृष्टिकोण पर विचार करना होगा।गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का आरंभ औपनिवेशिक व्यवस्था के पतन और अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका एवं विश्व के अन्य क्षेत्रों के लोगों के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हुआ था जब शीत युद्ध भी अपने चरम पर था।वर्ष 1960 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के पंद्रहवें साधारण सत्र में गुटनिरपेक्ष देशों के आंदोलन का जन्म हुआ जिसके परिणामस्वरूप 17 नए अफ्रीकी और एशियाई सदस्य देशों को प्रवेश मिला।तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने ‘गुटनिरपेक्षता’ या शीत युद्ध में संलग्न दो महाशक्तियों से ‘तीसरी दुनिया’ की एकसमान दूरी की अवधारणा को भी बढ़ावा दिया। इन अवधारणाओं पर आगे बढ़ते हुए वर्ष 1955 में ‘बांडुंग सम्मेलन’ (Bandung Conference)[2] का आयोजन किया गया।गुटनिरपेक्ष देशों के प्राथमिक उद्देश्य आत्मनिर्णय, राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा राज्यों की संप्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता के समर्थन करने तथा बहुपक्षीय सैन्य समझौतों के गैर-अनुपालन पर केंद्रित थे।1980 के दशक के अंत तक पहुँचते समाजवादी ब्लॉक के पतन के साथ इस आंदोलन को वृहत चुनौती का सामना करना पड़ रहा था। दो विरोधी गुटों के बीच संघर्ष (जो गुटनिरपेक्ष आंदोलन के अस्तित्व, नाम और मूल भावना का कारण था) के अंत के साथ ही माना जाने लगा कि अब इस आंदोलन के अंत का आरंभ भी हो चुका है।बहु-संरेखण: यह समानांतर संबंधों की एक शृंखला है जो बहुपक्षीय साझेदारी को सुदृढ़ करती है और सुरक्षा, आर्थिक समता और आतंकवाद जैसे अस्तित्वकारी खतरों के उन्मूलन के लिये समूह के बीच एक साझा दृष्टिकोण की तलाश करती है। नीचे कुछ समूहों/मंचों के विवरण हैं जहाँ भारत का बहुपक्षीय या बहु-संरेखीय दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से नज़र आता है:[3]

इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर (INSTC): यह 7,200 किलोमीटर लंबा मल्टी-मोडल ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर है जिसमें सड़क, रेल और समुद्री मार्ग शामिल हैं। यह सेंट पीटर्सबर्ग (रूस) को मुंबई से जोड़ता है।इंटरनेशनल नॉर्थ-साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर भारत को यूरेशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र को बढ़ावा देने की दिशा में रूस, ईरान और मध्य एशियाई गणराज्यों के साथ सहयोग करने के लिये एक मंच प्रदान करता है।INSTC के पूर्णतः कार्यान्वित होने पर स्वेज नहर के डीप-सी मार्ग की तुलना में माल ढुलाई लागत में 30% और यात्रा के समय में 40% की कमी आने की उम्मीद है।ब्रिक्स: ब्रिक्स (BRICS) विश्व की अग्रणी उभरती अर्थव्यवस्थाओं—ब्राजील,

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 8, August 2017

रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका के समूह के लिये संक्षिप्त शब्द है। यह समूह एक सुनियोजित तंत्र के माध्यम से लोगों के आपसी संपर्क में वृद्धि सहित आर्थिक, राजनीतिक और सुरक्षा सहयोग का लक्ष्य रखता है। (NDB) की सह-स्थापना में भारत की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही थी। यह एक नई बहुपक्षीय पहल है जो विश्व बैंक को प्रतिस्पर्द्धा दे सकती है।शंघाई सहयोग संगठन (SCO): SCO एक यूरेशियाई राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य संगठन है जिसका उद्देश्य इस क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखना है।सदस्यता: कज़ाखस्तान, चीन, किर्गिस्तान, रूस, ताजिकिस्तान, उज़्बेकिस्तान, भारत और पाकिस्तान।ईरान और बेलारूस इसके दो नए सदस्य होंगे।SCO के माध्यम से चीन और रूस पश्चिम का, विशेष रूप से नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) के विस्तार का मुक़ाबला करना चाहते हैं।चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (Quadrilateral Security Dialogue- Quad): यह भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के बीच अनौपचारिक रणनीतिक संवाद मंच है जो 'मुक्त, खुले और समृद्ध' हिंद-प्रशांत क्षेत्र को समर्थन देने और चीन के प्रभाव को नियंत्रित रखने का साझा उद्देश्य रखता है।[4]

भारत की विदेश नीति के लिये समकालीन चुनौतियाँ

रूस-चीन धुरी का उभार: रूस की अपनी परिधि क्षेत्र के मामलों में दिलचस्पी बढ़ती जा रही है। इसके अलावा, क्रीमिया के विलय के बाद उस पर लगाए गए प्रतिबंधों ने उसे चीन के साथ घनिष्ठ संबंधों की ओर धकेल दिया है जो निश्चित रूप से भारत में उसकी रुचि को कम कर सकता है।भारत का आत्मारोपित अलगाव: वर्तमान में भारत दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) जैसे बहु-देशीय निकायों से अलग-थलग बना हुआ है। इसके अलावा, भारत ने क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP) से बाहर रहने का विकल्प चुना है।वैश्विक शक्ति बनने की भारत की महत्वाकांक्षा के साथ यह आत्मारोपित अलगाव (Self-Imposed Isolation) संगत नहीं है।पड़ोसी देशों के साथ कमज़ोर होते संबंध: भारतीय विदेश नीति के लिये एक अधिक चिंताजनक विषय पड़ोसी देशों के साथ कमज़ोर होते संबंध हैं। इसे श्रीलंका एवं पाकिस्तान के परिप्रेक्ष्य में चीन की 'चेक बुक डिप्लोमेसी', राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) के मुद्दे पर बांग्लादेश के साथ तनाव और नेपाल के साथ सीमा विवाद जैसे उदाहरणों में देखा जा सकता है।इस परिदृश्य में भारत देश के विकास पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय सुरक्षा पर भारी निवेश करने के लिये विवश है।पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को मज़बूत करना: भारत को बांग्लादेश, म्यांमार और श्रीलंका जैसे पड़ोसी देशों के साथ संबंध सुधार की दिशा में साहसिक प्रयास करने चाहिये। भू-राजनीति से परे जाकर देखना: सीमापारीय डिजिटल दिग्गजों की नियामक निगरानी, बिग डेटा प्रबंधन, व्यापार संबंधी मुद्दों और आपदा राहत जैसे विषयों को संबोधित करने के लिये भू-राजनीतिक सीमाओं के पारंपरिक दृष्टिकोण से परे जाकर भारत की विदेश नीति एजेंडे के फोकस का विस्तार करना अनिवार्य है।इस प्रकार, एक ऐसा बहु-संरेखीय दृष्टिकोण जो गुटनिरपेक्षता के कुछ प्रमुख मूल्यों को संरक्षित रखता हो, भारत के हितों के और 'वसुधैव कुटुम्बकम' की ओर आगे बढ़ने के उसके दृष्टिकोण के अनुकूल होगा।[5]

विचार-विमर्श

गुटनिरपेक्षता वास्तव में कोई निष्क्रियता नही है बल्कि यह एक सक्रिय और स्वतंत्र सिद्धान्त हैं। यह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में होने वाली घटनाओं के प्रति चुप्पी लगाकर बैठना नही बल्कि उनमें न्यायपूर्ण ढंग से सक्रिय भाग लेना हैं। गुट-निरपेक्षता का सामान्य अर्थ है "विभिन्न शक्ति से तटस्थ या अलग रहते हुए स्वतंत्र विदेश नीति और राष्ट्रीय हित के अनुसार न्याय का समर्थन करना।" गुटनिरपेक्षता शक्ति गुटो से अलग रहने की नीति पर चलने वाला देश अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में किसी शक्ति गुट अथवा खेमे के साथ बँधा हुआ नही हैं। उसका अपना सत्य न्याय औचित्य एवं शक्ति पर आधारित स्वतंत्र मार्ग हैं। गुटनिरपेक्षता का अर्थ अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में "तटस्थता" नही हैं। गुटनिरपेक्षता देश विश्व की घटनाओं के प्रति उदासीन नही रहते, बल्कि एक ऐसी स्पष्ट और रचनात्मक नीति का अनुसरण करते हैं जिससे विश्व मे शांति स्थापित हो सके।[6]

गुटनिरपेक्षता का सरल अर्थ है कि विभिन्न शक्ति गुटों से तटस्थ या दूर रहते हुए अपनी स्वतन्त्र निर्णय नीति और राष्ट्रीय हित के अनुसार सही या न्याय का साथ देना। आंख बंद करके गुटों से अलग रहना गुटनिरपेक्षता नहीं हो सकती गुटनिरपेक्षता का अर्थ है सही और गलत में अन्तर करके सदा सही नीति का समर्थन करना।

जार्ज लिस्का ने इसका सही अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि सबसे पहले यह बताना जरूरी है कि गुटनिरपेक्षता तटस्थता नहीं है। इसका अर्थ है उचित और अनुचित का भेद जानकर उचित का साथ देना। गुटनिरपेक्षता का सही अर्थ स्पष्ट करने के लिए यह बताना जरूरी है कि गुटनिरपेक्षता क्या नहीं है.

गुटनिरपेक्षता तटस्थता नहीं है

तटस्थता शब्द का प्रयोग प्रायः युद्ध के समय किया जाता है।

शान्तिकाल में भी यह एक प्रकार से युद्ध की मनोवृत्ति को प्रकट करती है। यह उदासीनता का दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह एक प्रकार की नकारात्मक प्रवृति है। जबकि गुटनिरपेक्षता का विचार सक्रिय एवं सकारात्मक है। इससे विश्व समस्याओं का बिना गुटों के भी समाधान किया जा सकता है। इस तरह गुटनिरपेक्षता एक सक्रिय विचार है गुट निरपेक्षता युद्धों में शामिल होकर भी बरकरार रहती है। भारत को चीन और पाकिस्तान के साथ युद्ध करने पड़े फिर वह गुटनिरपेक्ष देश है। तटस्थता युद्धों में भाग लेने

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 8, August 2017

पर समाप्त हो जाती है। स्वीटज़रलैंड एक तटस्थ देश है क्योंकि वह न तो किसी युद्ध में शामिल हुआ है और न ही उसे किसी सैनिक संगठन की सदस्यता प्राप्त है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गुटनिरपेक्षता तटस्थता की नीति नहीं है। [7]

गुटनिरपेक्षता अलगाववाद या पृथकतावाद नहीं है

पृथकवाद का अर्थ होता है प्रायः अपने को दूसरे देशों की समस्याओं से दूर रखना। अमेरिका ने प्रथम विश्व युद्ध से पहले इसी नीति का पालन किया। लेकिन गुटनिरपेक्षता अलगाववाद की नीति नहीं है। गुटनिरपेक्षता अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं में स्वयं रूचि लेने व सक्रिय भूमिका निभाने की नीति है। उदाहरण के लिए भारत ने शीत युद्ध में किसी गुट में शामिल न होकर भी इस समस्या के प्रति अपनी जागरूकता का परिचय दिया और दोनों गुटों में तनाव कम कराने के प्रयास भी किए। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गुटनिरपेक्षता तटस्थतावाद तथा अलगाववाद की नीति नहीं है। यह एक ऐसी नीति है जो सैनिक गुटों से दूर रहते हुए भी उनके काफी निकट है। [8]

गुट निरपेक्ष देश

गुटनिरपेक्षता का सही अर्थ जानने के लिए गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के तीन कर्णधारों पंडित जवाहर लाल नेहरू, नासिर व टीटो के विचारों को जानना आवश्यक है। इन तीनों नेताओं ने 1961 में गुटनिरपेक्षता को सही रूप में परिभाषित करने वाले निम्नलिखित 5 सिद्धान्त विश्व के सामने रखे--

1. जो राष्ट्र किसी सैनिक गुट का सदस्य नहीं हो।
2. जिसकी अपनी स्वतन्त्र विदेश नीति हो।
3. जो किसी महाशक्ति से द्विपक्षीय समझौता न करता हो।
4. जो अपने क्षेत्र में किसी महाशक्ति को सैनिक अड्डा बनाने की अनुमति न देता हो।
5. जो उपनिवेशवाद का विरोधी हो।

इस सिद्धान्तों के आधार पर कहा जा सकता है कि ऐसा देश जो सैनिक गुटों से दूर रहकर स्वतन्त्र विदेश नीति का पालन करता हो और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जागरूक हो गुट निरपेक्ष देश कहलाता है।[9]

भारत की गुटनिरपेक्षता नीति के सिद्धांत

विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे भारत की भूमिका हमेशा से ही असंलग्नयता गुटनिरपेक्षता की रही हैं। गुटनिरपेक्षता गुटों की पूर्व उपस्थित का संकेत कर देती है। जब भारत स्वाधीन हुआ तो उसने पाया कि विश्व की राजनीति दो विरोधी गुटों मे बँट चुकी हैं। एक गुट का नेता संयुक्त राज्य अमेरिका और दूसरे सोवियत संघ था। विश्व के अधिकांश राष्ट्र दो विरोधी खेमों मे विभाजित हो गये और भीषण शीत-युद्ध प्रारंभ हो गया। शीत-युद्ध का क्षेत्र विस्तृत होने लगा और इसके साथ-साथ एक तीसरे महासमर की तैयरी होने लगी। अतः भारत ने दोनों गुटों से पृथक रहने की जो नीति अपनायी उसे "गुटनिरपेक्षता" की नीति के नाम से जाना जाता हैं। इस नीति का आशय है कि भारत वर्तमान विश्व राजनीति के दोनों गुटों मे से किसी में से भी शामिल नही होगा, किन्तु अलग रहते हुए उनसे मैत्री सम्बन्ध कायम रखने की चेष्टा करेगा और उनकी बिना शर्त सहायता से अपने विकास मे तत्पर रहेगा। यह गुटनिरपेक्षता नकारात्मक तटस्थता, अप्रगतिशीलता अथवा उपदेशात्मक नीति नही हैं। इसका अर्थ सकारात्मक है अर्थात जो सही और न्यायसंगत हैं।

गुटनिरपेक्षता का अर्थ है विश्व के किसी भी गुट के साथ जुड़ा हुआ न होना, अर्थात नाटो, सीटो या वारसा संगठनों जैसे किसी सैनिक गठबंधन में शामिल न होना। यह ऐसी नीति है जो विश्व मे स्वतंत्र नीति का अनुसरण करती है और हर समस्या पर अपने विचारों को प्रकट करने और अपने दृष्टिकोण को अपनाने के लिए स्वतंत्र समझती है। यह किन्हीं पूर्वाग्रहों के आधारों पर कार्य नही करती। यह समस्याओं पर वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाती है, व्यक्तिनिष्ठ नही। भारत की यह गुट-निरपेक्षता पलायनवाद की नीति भी नही हैं। एशिया के प्रमुख राष्ट्र के रूप में भारत अपने उत्तरदायित्व से कभी बचना नहीं चाहता। किसी भी विवाद के शान्तिपूर्ण समाधान के लिए भारत की मध्यस्थता की सेवाएँ सदैव उपलब्ध रही हैं।[10]

गुटनिरपेक्षता के विकास के निम्नलिखित कारण हैं--

1. राष्ट्रीय स्वाधीनता की भावना

एशिया व अफ्रीका के राष्ट्र लम्बे समय तक उपनिवेशवाद के शिकार रहें। यहाँ के राष्टों ने अपनी राष्ट्रवाद की भावना को प्रज्ज्वलित कर स्वाधीनता का संघर्ष किया और साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद को जड़ से उखाड़कर स्वाधीनता प्राप्त की। ऐसे राष्ट्र अब किसी भी कीमत पर अपने स्वाधीनता को खोने नहीं चाहते थे। इसलिए वह महाशक्तियों के किसी गुट में सम्मिलित होने से अपने को बचाना चाहते थे।

2. महान नेताओं का नेतृत्व

द्वितीय विश्व युध्दोत्तर काल में गुटनिरपेक्षता देशों को विश्व स्तर के नेताओं का नेतृत्व प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। जवाहरलाल नेहरू, जोसिफ ब्रोज टीटो, अब्दुल गाथेर नासिर, एन्कुमा, सुकर्ण आदि ऐसे ही विश्व स्तर के महान नेता थे जिनके नेतृत्व मे

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 8, August 2017

गुटनिरपेक्षता आन्दोलन को नेतृत्व मिला।

3. आर्थिक कारण

गुटनिरपेक्षता राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता के समय आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक पिछड़े हुए थे। गरीब, बेरोजगारी, भुखमरी इन राष्ट्रों मे व्याप्त थी। स्वतंत्रता के पश्चात इन्हें अपने आर्थिक विकास के लिए अत्यधिक आर्थिक सहायता की आवश्यकता थी, जो इन्हें बिना किसी गुट में सम्मिलित हुए ही प्राप्त हो सकती थी।[11]

4. विश्व शांति की स्थापना

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात महाशक्तियों के चल रहे शीत युद्ध से दूर रहकर वे अपना विकास करना चाहते थे जो शांतिपूर्ण स्थिति में ही सम्भव हो सकता था। इसलिए नवोदित राष्ट्रों ने गुटो से अगल रहकर विश्व रहकर शांति स्थापना के लिए गुट-निपेक्षता आन्दोलन को बल दिया।

5. जातीय एवं सांस्कृतिक कारण

गुटनिरपेक्षता की नीति एक जातीय और सांस्कृतिक पहलू भी हैं। इस नीति के समर्थक मुख्यतः एशिया और अफ्रीका के वे देश हैं जिनका यूरोपीय राष्ट्रों ने राजनीतिक तथा सांस्कृतिक एकता की कड़ियाँ यद्यपि मजबूत नही हैं तथापि इसमें सभी एकमत हैं कि वे किसी भी बड़ी शक्ति के अधीन न रहें।[12]

परिणाम

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् **गुटनिरपेक्षता** के लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं

(1) **शीत युद्ध -**

शीत युद्ध के वातावरण में नव स्वतन्त्र राष्ट्रों ने किसी भी पक्ष का समर्थन न करके पृथक् रहने का निर्णय किया । शीत युद्ध से पृथक् रहने की नीति ही आगे चलकर **गुटनिरपेक्षता** के नाम से जानी जाने लगी।

(2) **मनोवैज्ञानिक विवशता -**

नवोदित राष्ट्रों के **गुटनिरपेक्षता** की नीति अपनाने का दूसरा कारण एक भावात्मक और मनोवैज्ञानिक विवशता थी और वह यह कि वे न केवल औपचारिक अर्थ में स्वतन्त्र हों, बल्कि शक्तियों के प्रभुत्व या प्रभाव के अवशेषों से एकदम मुक्त प्रतीत भी हों।

(3) **सैनिक गुटों से पृथक रहना-**

एशिया-अफ्रीका के अनेक स्वतन्त्र राष्ट्र किसी भी सैनिक गुट में फँस जाने के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि वे अपनी समस्याएँ किसी सैनिक गुट के हस्तक्षेप से नहीं सुलझाना चाहते थे।[13]

(4) **अपनी पहचान कायम रखना-**

नवोदित राष्ट्रों को ऐसा लगा कि **गुटनिरपेक्षता** उनके लिए, विशेषतः दोनों गुटों के वैचारिक संघर्ष के रूप में अपने पृथक् और विशिष्ट वैचारिक स्वरूप को बनाए रखने का साधन थी। वे अपने राजनीतिक,आर्थिक,सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाओं के पृथक् स्वरूप को बनाए रखना चाहते थे।

(5) **स्वतन्त्र विदेश नीति की कामना-**

नवोदित एशिया और अफ्रीका के राष्ट्र **गुटनिरपेक्षता** की नीति के माध्यम से अपने को स्वतन्त्र शक्ति के रूप में स्थापित करना चाहते थे। **गुटनिरपेक्षता** की विदेश नीति के फलस्वरूप आज ये किसी बड़ी शक्ति के इशारों पर नाचने के लिए बाध्य नहीं हैं।

(6) **आर्थिक कारक-**

गुटनिरपेक्षता का एक अन्य आधार आर्थिक है। प्रायः सभी गुटनिरपेक्ष देश आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए थे और उनका रहन-सहन का स्तर निम्न था। अतः उन्होंने अपनी विदेश नीति को ऐसा मोड़ दिया कि उन्हें जहाँ से भी कोई शर्त रखे बगैर आर्थिक सहायता मिल सकती हो, मिल जाए,क्योंकि उन्हें उसकी सतत् आवश्यकता थी।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की उपलब्धियों (सफलताओं/भूमिका) को निम्न प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं

(1) **नि:शस्त्रीकरण में योगदान-**

निःशस्त्रीकरण और शस्त्र नियन्त्रण के लिए बातचीत करने में गुटनिरपेक्ष देशों ने जो भूमिका निभाई,उसमें उन्हें एकदम सफलता तो नहीं मिली। फिर भी उसने लोगों को यह नहीं भूलने दिया कि विश्व-शान्ति को बढ़ावा देने की सारी चर्चा के सामने अस्त्र-शस्त्र बढ़ाने की बेलगाम दौड़ कितनी खतरनाक है।

(2) **स्वतन्त्र वातावरण का निर्माण-**

नवोदित कमजोर राष्ट्रों को महाशक्तियों के चंगुल से निकालकर उन्हें स्वतन्त्रता के वातावरण में अपना अस्तित्व बनाए रखने का अवसर **गुटनिरपेक्षता** ने प्रदान किया।[14]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 8, August 2017

(3) **अपना राष्ट्रीय ढाँचा विकसित करना-**
गुटनिरपेक्ष देशों की उपलब्धियों में एक बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने अमेरिका और सोवियत संघ के आदर्शों को अपने ऊपर थोपे जाने का विरोध किया और अपनी राष्ट्रीय प्रकृति के अनुसार विकास के अपने राष्ट्रीय ढाँचों और पद्धतियों का आविष्कार किया।

(4) **संयुक्त राष्ट्र संघ के स्वरूप को रूपान्तरित करना-**
गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र संघ को छोटे राष्ट्रों के बीच शान्ति कायम रखने वाले संगठन से ऐसे संगठन में रूपान्तरित करने में सहायता दी जिससे छोटे राष्ट्र बड़े राष्ट्रों पर कुछ नियन्त्रण रख सकें । उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा की भूमिका का महत्त्व बढ़ा दिया, जिसमें सभी सदस्यों का बराबर प्रतिनिधित्व होता है और सुरक्षा परिषद् की भूमिका को कम कर दिया।

(5) **अविकसित राष्ट्रों के मध्य आर्थिक सहयोग की बुनियाद-**
गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों को अविकसित राष्ट्रों के मध्य आर्थिक सहयोग की बुनियाद रखने में सफलता मिली है। कोलम्बो शिखर सम्मेलन में तो एक आर्थिक घोषणा-पत्र स्वीकार किया गया जिसका मुख्य आधार यह था कि गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के बीच अधिकाधिक आर्थिक सहयोग हो और इस आर्थिक सहयोग के लिए प्रत्येक सम्भव प्रयत्न किया जाए। -

(6) **शीत युद्ध को तनाव-**
शैथिल्य में बदलना-शीत युद्ध को तनाव-शैथिल्य (देतान्त) की स्थिति में लाने का श्रेय गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को ही है।

(7) **शीत युद्ध को शस्त्र युद्ध में परिणत होने से रोकना-**
गुटनिरपेक्ष देशों ने दोनों गुटों के बीच सद्भावना और सम्पर्क के माध्यम का काम किया तथा दोनों पक्षों के बीच खाम-ख्यालियाँ और गलतफहमियाँ दूर कर इसे शस्त्र युद्ध में बदलने से रोक दिया।

(8) **विश्व राजनीति में संघर्षों को टालना-**
गुटनिरपेक्षता की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि उसके प्रभाव से विश्व के कुछ विकट संघर्ष टल गए या उनकी तीव्रता कम हुई या फिर उनका समाधान हो गया और विशेषतः तीसरा विश्व युद्ध नहीं छिड़ा। इसके साथ-साथ अविकसित तथा विकासशील देशों को शान्तिपूर्ण मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी और इस प्रकार उसने अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों को स्थिर रूप देने में योगदान दिया।[15]

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की विफलताएँ (असफलताएँ)

इस सम्बन्ध में आलोचक निम्नलिखित तर्क देते हैं

(1) **अवसरवादी और काम निकालने की नीति-**
आलोचकों के अनुसार **गुटनिरपेक्षता** एक अवसरवाद और काम निकालने की नीति होकर रह गई है और गुटनिरपेक्ष देश सिद्धान्तहीन हैं । ये देश दोनों गुटों से अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने का और जिसका पलड़ा भारी हो,उसकी ओर मिल जाने का ध्येय रखते हैं।

(2) **संकुचित नीति-**
गुटनिरपेक्षता का दायरा बहुत सीमित है। सारी नोति गुटों की राजनीति के आसपास घूमती है । या तो गुटों के आपसी झगड़ों में पंच बनने की कोशिश करना या दोनों से अलग रहते हुए एक के केवल इतने समीप जाने का प्रयत्न करना कि दूसरा बुरा न माने और यदि दूसरे के बुरा मानने का डर है, तो पहले से नाप-तौलकर दूर हटना या बारी-बारी से पास जाना या दूर हटना, यही **गुटनिरपेक्षता** की शैली है।

(3) **बुनियादी एकता का अभाव-**
आलोचकों के अनुसार गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों में बुनियादी एकता का अभाव है । समृद्ध राष्ट्रों के शोषण के विरुद्ध मोर्चाबन्दी करना तो दूर, वे आपस में भी एक-दूसरे की सहायता करने की कोई ठोस योजना नहीं बना सके हैं।

(4) **बाह्य सहायता पर निर्भर-**
गुटनिरपेक्ष देशों की एक बड़ी विफलता यह रही है कि वह बाहरी आर्थिक व बाह्य सहायता पर बुरी तरह निर्भर हैं। अतः सहायता प्राप्ति के लिए उन्हें महाशक्तियों का मुँह ताकना पड़ता है व उनकी शर्ते भी माननी पड़ती हैं । अतः **गुटनिरपेक्षता** का भलीभाँति पालन नहीं हो पाता है।[16]

(5) **नाममात्र की गुटनिरपेक्षता-**
गुटनिरपेक्षता नाममात्र की है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के अधिकांश सदस्य किसी-न-किसी गुट से सम्बद्ध हैं।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की चुनौतियाँ अथवा समस्याएँ

(1) **सैनिक दबाव-**
महाशक्तियाँ गुटनिरपेक्ष देशों पर सैनिक दबाव डालती रहती हैं। अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करने के लिए महाशक्तियाँ **गुटनिरपेक्षता** की नीति अपनाने वाले देशों को अपने सैनिक संगठनों के माध्यम से घेरने की कोशिश करती हैं। भारत जैसे गुटनिरपेक्ष देश के विरुद्ध अमेरिका पाकिस्तान को शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित करता रहा है।

(2) **गुटनिरपेक्ष देशों में पारस्परिक तनाव एवं वैमनस्य-**

गुटनिरपेक्ष देश पर्याप्त रूप से संगठित नहीं हैं। उनमें तनाव और भयंकर विवाद उभरते रहे हैं। उदाहरण के लिए, भारत और बांग्लादेश, दोनों ही **गुटनिरपेक्षता** के समर्थक हैं । लेकिन कोलम्बो शिखर सम्मेलन में बांग्लादेश ने भारत के साथ गंगा के पानी के बँटवारे के प्रश्न को उठाकर दुनिया के सामने अपने आपसी तनाव का ही प्रकटीकरण किया। _

(3) **गुटनिरपेक्ष देशों में अस्थिरता उत्पन्न करना-**

महाशक्तियाँ गुटनिरपेक्ष देशों में हस्तक्षेप करती रहती हैं और अपने गुप्तचरों के माध्यम से अस्थिरता लाने के प्रयास करती हैं। क्यूबा जैसे गुटनिरपेक्ष देशों में अमेरिका ने सी. आई. ए. के माध्यम से फिदेल कास्त्रो सरकार को गिराने की बार-बार कोशिश की। चिली के राष्ट्रपति रुलेण्डे की हत्या में सी.आई.ए.का हाथ था।

(4) **यह मात्र एक नैतिक आन्दोलन है-**

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन नैतिक अपील-सा लगता है । यह मानवता की रक्षा की आवाज बुलन्द कर सकता है, किन्तु शस्त्रों द्वारा शान्ति स्थापित नहीं कर सकता, आक्रमणों का प्रतिरोध नहीं कर सकता। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अफगानिस्तान में सोवियत संघ के हस्तक्षेप की प्रत्यक्षतः भर्त्सना नहीं कर सका।

(5) **आर्थिक पिछड़ापन-**

गुटनिरपेक्ष देश आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। इन देशों को अपने आर्थिक विकास के लिए महाशक्तियों पर निर्भर रहना पड़ता है। महाशक्तियाँ आर्थिक लालच देकर इन छोटे और कमजोर गुटनिरपेक्ष देशों का शोषण करती हैं। वे इन्हें आर्थिक सहायता का लुभावना मोह दिखाकर उन्हें अपने गुट में बाँधने का प्रयत्न करती हैं।

सिद्धान्ततः **गुटनिरपेक्षता** एक आदर्शवादी नीति है, परन्तु **गुटनिरपेक्षता** उसी स्थिति में उचित थी जब विश्व दो गुटों में विभाजित था। सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् विश्व का सम्पूर्ण राजनीतिक परिदृश्य बदल चुका है। विश्व में गुटों के राजनीति खत्म हो चुकी है। सैनिक गठबन्धन टूट रहे हैं। अमेरिका वर्तमान एकधुवीय विश्व का सर्वमान्य नेता है । वह समस्त विश्व पर अपनी दादागीरी दिखा रहा है। विगत कुछ वर्षों से गुटनिरपेक्ष आन्दोलन निर्जीव पड़ गया है।[17]

शीत युद्ध की समाप्ति (**सोवियत संघ के विघटन**) के पश्चात् प्रायः यह प्रश्न उठाया जाता रहा है कि एकध्रुवीय व्यवस्था में **गुटनिरपेक्षता** अथवा गुटनिरपेक्ष आन्दोलन जैसी संस्था की क्या उपयोगिता है ? यह प्रश्न इसलिए किया जाता है क्योंकि इस आन्दोलन का जन्म शीत युद्ध की राजनीति के प्रतिक्रियास्वरूप ही हुआ था।

शीत युद्ध के चलते दोनों महाशक्तियाँ कम-से-कम इनकी बात अवश्य सुन लेती थीं। अब इस आन्दोलन की इतनी पूछ भी नहीं है । हाँ, निर्गुट आन्दोलन की बैठकें बराबर हो रही हैं । परन्तु इसके सदस्य देशों की माली (आर्थिक) हालत इतनी नाजुक है कि इनके नेता हर समय विश्व बैंक से कर्जे की अर्जी लिए वाशिंगटन में मौजूद रहते हैं। विश्व बैंक में अकेले अमेरिका का सर्वाधिक 20% हिस्सा है। उसकी मर्जी के बिना वहाँ से कौड़ी भी नसीब नहीं हो सकती । इसलिए ये देश फिलहाल अमेरिका के सामने खड़े होने की हैसियत में नहीं हैं। आर्थिक तंगी, भ्रष्टाचार, बढ़ती हुई गरीबी और जन-असन्तोष के कारण निर्गुट आन्दोलन के देश राजनीतिक अस्थिरता से पीड़ित हैं, इसलिए यह आन्दोलन मृत है।" सन् 1992 में गुटनिरपेक्ष देशों के विदेश मन्त्रियों की बैठक में मिस्र ने इस आन्दोलन को समाप्त करने की अपील की थी। उसका तर्क था कि सोवियत संघ के विघटन और शीत युद्ध की समाप्ति के बाद गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता समाप्त हो गई है।

परन्तु जो लोग यह कहते हैं कि शीत युद्ध की समाप्ति के बाद इस आन्दोलन की उपयोगिता समाप्त हो गई है, वे गलती पर हैं, क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन एक सकारात्मक प्रयास भी है। यह ठीक है कि प्रारम्भ में गुटनिरपेक्ष देश का आशय उस देश से लिया जाता था जो संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ,दोनों में से किसी से राजनीतिक और सैनिक रूप से न जुड़ा हो । परन्तु यह भी ठीक है कि कालान्तर में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में शामिल राष्ट्र उपर्युक्त शर्त का पालन नहीं कर सके,क्योंकि इस आन्दोलन के सदस्य देश नव-स्वतन्त्र राष्ट्र थे, जिन्हें अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के लिए दोनों महाशक्तियों में से किसी की भी सहायता की आवश्यकता थी। स्वयं भारत ने सन् 1971 में सोवियत संघ से 20-वर्षीय सन्धि की थी। इसलिए गुटनिरपेक्ष राष्ट्र का अर्थ अमेरिका या सोवियत संघ से पृथक् रहना नहीं, वरन् वह राष्ट्र माना गया जिसकी विदेश नीति स्वतन्त्र हो और उसका निर्माण बिना किसी बाह्य दबाव के किया गया हो । आज गुटनिरपेक्ष राष्ट्र को यही अवधारणा है और ऐसी स्थिति में विश्व के एकधुवीय अथवा द्विध्रुवीय होने से **गुटनिरपेक्षता** की उपयोगिता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि **शीत युद्ध समाप्त** तो नहीं हुआ है, वरन् उसने दूसरा स्वरूप धारण कर लिया है। यदि मान भी लिया जाए कि शीत युद्ध समाप्त हो गया है, तो भी **गुटनिरपेक्ष आन्दोलन** की उपयोगिता बनी रहेगी। एशिया में **संयुक्त राज्य अमेरिका** की बढ़ती रुचि के सम्बन्ध में गुटनिरपेक्ष देशों का विश्वव्यापी महत्त्व हो जाता है। अमेरिका एशिया को सामरिक शस्त्रीकरण के दायरे में घसीटना चाहता है और वहाँ अपने नाभिकीय प्रक्षेपास्त्र तैनात करना चाहता है। यह बात छिपी नहीं है कि अमेरिका एशियाई देशों को अपनी आक्रमणकारी योजनाओं का लक्ष्य बनाना चाहता है। यही कारण है कि वह एशिया के वर्तमान

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 8, August 2017

तनावों से लाभ उठाने का अवसर देखता है और नये तनाव उत्पन्न करना चाहता है। ऐसी स्थिति में शान्ति, तटस्थता और नाभिकीय मुक्त क्षेत्र की स्थापना के लिए इस आन्दोलन का महत्त्व बद जाता है।[18]

शीत **युद्ध की समाप्ति** के बाद भी विश्व एक नीति और आन्दोलन दोनों रूपो मे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का महत्त्व बना रहेगा। राजनीतिक और आर्थिक, दोनो क्षेत्रों में इस आन्दोलन की महना बनी रहेगी। सोवियत संघ के विषटन के बाद यह बात बार-बार उभरी कि **गुटनिरपेक्ष आन्दोलन** का कोई औचित्य नहीं रह गया है। जब दो महाशक्तियों नहीं हैं, तो इस आन्दोलन की क्या आवश्यकता है। परन्तु इस आन्दोलन के अधिकांश सदस्य देशों ने इस बात को नकार दिया है। उनका कहना है कि पहले दो शक्तियों परस्पर टकराती थी, अब जबकि केवल एक ही शक्ति बची है, तो उसकी दादागीरी का खतरा और बढ़ गया है। अतः इस संगठन को समाप्त करने के बजाय और अधिक मजबूत बनाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

अंर्तराष्ट्रीय राजनीति मे गुट निरपेक्ष नीति का एक महत्वपुर्ण स्थान है । द्वितीय विश्वयुद्व के पश्चात् यूरोप के सभी राष्ट्रो मे अपनी स्वतंत्रता को बनाये रखने की समस्या थी । तब दो महाशक्तियाॅ विश्व रंग मंच पर उभर कर सामने आई । ये महाशक्तियाॅ थी संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत समाजवादी गणतंत्र संघ इसी समय अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के अनेक देश औपनिवेशक दासता से स्वंतंत्र हो रहे थे । इन नवोदित राष्ट्रो ने स्वंय को महाशक्तियों के गुटो मे शामिल रहने की अपेक्षा गुट निरपेक्ष नीति को अपनाना उचित समझा ।

गुट निरपेक्षता की नीति का सर्वप्रथम उल्लेख सिंतबर 1947 मे वायसराय की कार्यकारी परिषद कि उपाध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू ने अपने प्रथम भाषण मे किया था । उन्होने कहा था कि " वैदेशिक मामलो मे जहाॅ तक संभव होगा । हमारी प्रस्तावित नीति दुनिया के किसी भी गुट से दूर रहने की होगी । विश्व राजनीति मे अमेरिका एंव सोवियत संघ एक दूसरे के खिलाफ मोर्चा खोले हुये है । और हम इन के विवाद मे नही पडना चाहते । "द्वितीय विश्व युद्व के पश्चात् अंतर्राष्ट्रीय राजनीति मे परिवर्तन लाने वाले तत्वो मे गुट निरपेक्षता का अपना विशेष महत्व है । इस आंदोलन का जन्म कोई संयोग नही बल्कि यह सुविचारित धारणा थी । इसका उद्देश्य नवोदित राष्ट्रांे की स्वतंत्रता की रक्षा करना एंव युद्वो को रोकना था । गुट निरपेक्षता की नीति का उदय का प्रमुख कारण था साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद से मुक्ति पाने वाले देशो के शक्तिशाली गुटो से अलग रखकर उनकी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना था । 1947 मे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने गुट निरपेक्ष नीति को अपनी विदेश नीति का हिस्सा बनाया । इसके बाद संयुक्त राज्य अमेरिका एशिया और अफ्रीका ने भी गुट निरपेक्ष नीति के प्रति अपनी आस्था प्रकट की । 1961 मे बेलग्रेड शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले देशो की संख्या 25 थी । कार्टगन शिखर सम्मेलन मे अक्टुबर 1995 में 108 राष्ट्र सम्मिलित हुये । आज निर्गुट आंदोलन के सदस्य राष्ट्रो की संख्या 120 है । गुटनिरपेक्षता से अभिप्राय है, अपनी स्वतंत्र नीति से है । गुटो से अलग रहकर प्रत्येक प्रश्न का औचित्स और अनौचित्य देखा जा सकता है । जार्ज श्वार्जनबर्गर ने गुट निरपेक्षता के 6 अर्थ बताये है । अलगाववाद, अप्रतिबद्धता, तटस्थता, तटस्थीकरण एक पक्षवाद और असंलग्नता । गुटनिरपेक्षता की नीति पिछले पांच दशक से चल रही है । आज संयक्त राष्ट्र संघ के अधिकांश देश इसे व्यवहार मे ला रहे है । गुट निरपेक्षता का अर्थ गुटो पृथक रहने की नीति से है । अर्थात् गुट निरपेक्षता देश महाशक्तियो के प्रति गुट और दोश के आधार पर अपनी स्वतंत्र नीति का निर्धारित कर सभी राज्यो के साथ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व एंव सहयोग के आधार पर संबध स्थापित करें ।[12]

द्वितीय विश्वयुद्व के पश्चात् एशिया और अफ्रीका ने नवस्वतंत्रता प्राप्त राष्ट्र® व्दारा गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने का प्रमुख कारण शीत युद्व था । द्वितीय विश्वयुद्व के बाद विश्व दो गुटो मे बट गया था । पूंजीवादी गुट का नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका एंव साम्यवादी गुट का नेतृत्व सोवियत संघ व्दारा किया जा रहा था । दोनो पक्षो मे तीव्र तनाव वैमनस्य और मतभेद उत्पन्न हो गये थें उनमे एक दूसरे के विरूद्व आरोप प्रत्यारोप का राजनीति प्रचार प्रारम्भ हो गया था । बारूद के गोलो के स्थान पर अखबारो से लडे जाने वाले इस युद्व को शीतयुद्व की संज्ञा दी गई । इस वातावरण मे नवस्वतंत्र राष्ट्रो के किसी भी पक्ष मे न रहने का निर्णय लिया । अंतराष्ट्रीय राजनीति मे यह नीति आगे चलकर गुट निरपेक्षता के नाम से जानी लगी । गुटनिरपेक्ष आंदोलन मे भारत की भूमिका संक्रिय एंव महत्वपूर्ण रही । यह मार्गदर्शन एंव नेतृत्व की थी । भारत विश्व का पहला देश है जिसने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति मे इस नीति की व्याख्या की और प्रसार किया तथा नवस्वतंत्र देशो को अपनाने के लिये प्रेरित किया उन्हे संगठित करने का प्रयास किया । इसके संस्थापक नेहरू , टीटो, नासिर, सुकेर्णो तथा एन्क्रुमा थें । गुट निरपेक्षता की नीत के प्रति भारत की दुढ निष्ठा स्वतंत्रता आदोलन की ऐतिहासिक परिस्थितियों मे उत्पन्न हुई । 1947 मे नेहरू जी ने एशियायी देशो की शक्ति एंव एकता प्रदर्शित करने के लिये एशियायी देशो का सम्मेलन आमंत्रित किया । जनवरी 1949 मे भारत ने 18 सदस्यो का एक सम्मेलन नई दिल्ली मे आमंत्रित किया जिसमे इंडोनेशिया की स्वतंत्रता के प्रति कार्यवाही करने के लिये संयुक्त राष्ट्र संघ से प्रार्थना की । 1955 मे इंडोनेशिया के एक शहर बाण्डुग मे एशियायाी एंव अफ्रीकी देशो का एक सम्मेलन हुआ इसी सम्मेलन में गुट निरपेक्षता आंदोलन की नींव रखी गई । इस सम्मेलन मे उपस्थित 25 देशो व्दारा उपनिवेशवाद का खंडन, नवस्वतंत्र राष्ट्र का विकास एंव सहयोग की अनिवार्यता, पंचशील एंव शांतिपूर्ण सहकारिता के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय तनावों का दूर करने की मांगो ने इस आंदोलन को वैचारिक एव दार्शनिक आयामो पर बल दिया 1955 के बाण्डुग सम्मेलन मे भारत गुटनिरपेक्ष देशो का प्रमुख

प्रववक्ता बन गया तथा एशिया और अफ्रीकी के नवस्वतंत्र राष्ट्रो व्दारा इस नीति का अनुसरण करना आवश्यक नियम बन गया। इस नीति के सफल प्रतिपादन का श्रेय भारत विशेष रूप मे नेहरूजी को जाता है।[15]

गुट निरपेक्षता के संबध मे नेपाल नरेश वीरेन्द्र का कहना था कि " हम अपने क्षेत्र मे अपनी इच्छा न तो किसी के उपर थोपेंगें और न ही किसी अन्य शक्ति को इस बात की अनुमति प्रदान करेंगें कि वह हम पर अपनी अच्छा थोपें। हम गुटनिरपेपक्षता की नीति का समर्थन करते रहेंगें।" पूव्रर प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी कहा था कि "प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक व्यक्ति को यदि वे सवंय के प्रति ईमानदार है अपना रास्ता चुनना होगा और कई परीक्षण साहस दुखो और अनुभवो के होकर गुजरने के बाद यह प्राप्त होगा। अपना स्वरूप और अपना व्यक्तित्व कायम रखने के लिये इसी दुढ संकल्प से हम गुटनिरपेक्षता को अपनाते है।" पीटर लियान का द्दष्टिकोण है कि आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संबधो से तटस्थता का एक कुटनीतिक एंव राजनीतिक अंश भी हो सकता है। प्रो. लल्लन जी का मत है कि तटस्थता मे कोई भी राष्ट्र युध्दरत राष्ट्रो के समान व्यवहार करता है जबकि गुट निरपेक्षता के कोई भी राष्ट्र अपने हितो को प्र®त्साहन देने के लिये किसी युध्दरत राष्ट्र का साथ दे सकता हेै इस प्रकार गुटनिरपेक्षता राष्ट्र विश्व की घटनाओ के प्रति उदासीन नही रहते बल्कि स्पष्ट और रचनात्मक नीति अपनाते है जो विश्व शांति कायम रखने मे सहायता कर सके देश मे आंतरिक अशांति और अव्यवस्था, विस्तुत क्षेत्रफल, बढती हुई जनसंख्या औद्योगिक पिछडापन और सैनिक अक्षमता जैसी अनेक समस्याये स्वतंत्रता के पश्चात भारत के समक्ष थी। इनकी समस्याओ के कारण भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति को अपनाकर भोगौलिक और सामजिक संतुलन रखते हुई विदेशी आर्थिक एंव तकनीकी सहायता लेकर राष्ट्रीय विकास का मार्ग अपनाया अतः नेहरू जी ने घोषित किया कि चाहे जो भी हो जये हम किसी देश के साथ सैनिक संधि नही करेंगे। जब हम गुटनिरपेक्षता का विचार छोड देते है तो अपना स्थान छोडकर कहने लगते है किसी देश से बंधना आत्मसम्मान खोना है। यह अपने बहुमूल्य निधि का विनाश है।[17]

देश मे भारी उद्योगो की स्थापना मे सोवियत संघ ने मदद की। भारत ने रक्षा उपकरणो का आयात पश्चिमी देशो से ही किया और रक्षा से संबधित प्रशिक्षण भी पश्चिमी देशो से लिया। भारत ने रक्षा संबधी उपकरण सोवितयत संघ से खरीदे और उसका भुगतान अपरिवर्तन रूपये मे किया क्योकि भारत के पास विदेशी मुद्रा भंडार की कमी थी वही अमेरिका और उसके मित्र देशो का झुकाव पाकिस्तान की ओर हो चुका था। जवाहर लाल नेहरू दोनो महाशक्तियो से सहायता प्राप्त करना चाहते थें परतु वे किसी तीसरे संगठन के पक्षध्ार नही थें भारत ने गुटनिरपेक्षता देशो के आंदोलन की कभी भी तीसरे संगठन के रूप मे गठित करने की कोशिश नही की। गुटनिरपेक्षता आंदोलन की आज तक की सबसे प्रमुख कमी यह रही थी सम्मेलनों मे बडी बडी बाते होती है परंतु उसका प्रभाव नगण्य रहता है। संगठन के नेताओ व्दारा कभी यह प्रयास नही किया गया कि इस संगठन को संयुक्त राष्ट्र संघ की भांति मजबुत बनाया जाये और सदस्य राष्ट्रो को ऐसी प्रमुख समिति का निर्माण किया ज® सदस्य देशो के आपसी विवादो का निपटारा करने मे सक्षम हो परतु आज तक ऐसा कोई सार्थक प्रयास नही किया गया गुट निरपेक्ष आंदोलन पिछडे हुई देशो की ऐसी रंगमंच प्रस्तुत करता है जहाॅ से वे अपनी आवाज उठा सकते है। विश्व मे रंगभेद की नीति आर्थिक शाष्ेाण उपनिवेशवाद साम्राज्यवाद शस्त्ाो की दौङ आदि को समाप्त करने के लिये गुटनिरपेक्ष आंदोलन ंएक सशक्त माध्यम है और इसे अािधक प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है।

पिछले अनेक वर्षो मे इस आंदोलन ने किसी भी महत्वपूर्ण मामलो मे अपना योगदान देने मे सक्षम नही रहा है। अफगानिस्तान के तालिबान शासन की मनमानी मे यह आंदोलन मुक दर्शक रहा। 11 सितंबर 2001 को आंतकवादी घटना के पश्चात् जार्ज बुश ने अफगानिस्तान को सबक सिखाने के लिये सैनिक कार्यवाही प्रारंभ किया और उस समय गुटनिरपेक्ष देश कर्तव्य विमुख दिखाई पडें। जब सद्दाम हुसैन को नेस्ताबुद करने के उद्देश्य से जार्जबुश ने इराक के विरूद्व सैनिक कार्यवाही करने का प्रयास किया उस समय भी गुटनिरपेक्षता देश तमाशाबीन बन रहे। गुटनिरपेक्ष देशो को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति मे विशेष महत्व प्राप्त नही होता क्योकि सदस्य देशो ने एकजुटता के अभाव मे जैसे भारत एंव पाकिस्तान के मध्य कटुता इनके जन्म से ही जारी है। पाकिस्तान को गुटनिरपेक्ष देश बनाने का श्रेय भारत को ही है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन को सशक्त बनाने मे भारत की भूमिका महत्वूपर्ण रही है। भारत का हमेशा से यह प्रयास रहा है कि गुटनिपरेक्ष देश अंतर्राष्ट्रीय ने महत्वपूर्ण भूृमिका का निर्वाह करें। आंदोलन के अग्रणी नेता पंडित जवाहर लाल नेहरू थें वे अंतराष्ट्रीयवाद से प्रभावित थें। वे चाहते थें कि नाटो वारसा पैक्ट के अलग गुटनिरपेक्ष देशो का संगठन हो जो अंतर्राष्ट्रीय मामलो मे अपना पक्ष रखें। भारत का राजनैतिक आर्थिक एंव सामाजिक स्तर पर विकास हो यह आंदोलन 39 वर्ष पूर्ण कर चुका है अनेक उतार चढाव पार करते हुये आज भी अपने अस्तित्व की लडाई लड रहा है। राष्ट्रवाद की भावना निःश6ीकरण एंव उपनिवेशवाद की समाप्ति राष्ट्रीय विकास की इच्छा तथा सांस्कृतिक एंव जातीय पहलू ने इस आंदोलन को लोकप्रिय बनाने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

गुटनिरपेक्ष नीति अंतर्राष्ट्रीय राजनीति मे महत्वूपर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी है।। विश्व के दो गुटो मे संतुलन बनाना एंव विश्व शांति बनाये रखने मे गुटनिरपेक्ष राष्ट्रो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पराधीन राष्ट्रो को स्वतंत्ा कराने तथा गरीब तथा पिछडे देशो के आर्थिक विकास मे गुटनिरपेक्ष देशो ने सराहनीय योगदान दिया। मानवीय बन्धुत्व की भावना का प्रसार एंव सैनिक गुटो से अलग रहते हुये राष्ट्रीय हितो की वृद्वि मे गुटनिरपेक्षता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न मंचो से गुटनिरपेक्षता देशो ने उपनिवेशवाद एंव साम्राज्यवाद को नियंत्ाित करने निःशास्त्ाीकरण की भावना का विकास करने जातिवाद एंव रंगभेद की नीतियों का विरोध करने नई अंतराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के निर्माण मे सम्मलित होकर महत्वपूर्ण भूमिका निभायी और सफलता भी प्राप्त की। गुटनिरपेक्षता

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 4, Issue 8, August 2017

अंतराष्ट्रीय मानव व्यवहार का दर्शन हैः इसमे समस्याओ के समाधान के लिये बल प्रयोग का कोई स्थान नही है । इसकी सार्थकता कल भी उतनी ही रहेगी जितनी की आज है ।[14]

आज की अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियो मे गुटनिरेपक्षता अपना अस्तित्व कायम रखने के लिये और अधिक सक्रिय सजग भूमिका निर्वाह करना होगा । गुटनिरपेक्ष देशो के निःशस्.त्रीकरण की भावना को प्रोत्साहित करते हुये अविकसित देशो मे हस्तक्षेप की नीति को कम करने का प्रयास करने होगें । नवीन अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निर्माण मे गुट निरपेक्ष देशो को विकासशील राष्ट्रो के मध्य आर्थिक सहयोग को प्र®त्साहित करना होगा । शीत युद्ध एंव वारसा पैक्ट की समाप्ति के पश्चात गुटनिरपेक्षता का कोई ठोस राजनीतिक महत्व नही रह गया इसलिये इन राष्ट्रो को अपनी सार्थकता बनाये रखने के लिये आर्थिक क्षेत्र मे प्रभावशील करने की आवश्यकता है ।[18]

संदर्भ

1) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति: डाॅ बी.एल. फडिया
2) राजनीतिः- डाॅ एस.पी. गोविल डी.के बाजपेयी
3) भारतीय विदेश नीतिः- डाॅ वेद प्रताप वैदिक
4) भारतीय सुरक्षा चुनौतियों एंव प्रतिक्रियायेः- डाॅ सतीष चंद्र पाण्डेय
5) गुटनिरपेक्षता भारत और भविष्य $- डाॅ एम. एस राजन
6) दैनिक जागरणः- के सुब्रम्हण्यम
7) अंतर्राष्ट्रीय संबधो पर युद्व का प्रभावः- लल्लन सिंह
8) जनसत्ता नई दिल्ली
9) भारतीय विदेश नीति के संकेतः- डाॅ वेद प्रकाश वैदिक
10) राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षाः- लल्लन सिंह
11) Fidel Castro speech to the UN in his position as chairman of the nonaligned countries movement 12 अक्टूबर 1979 Archived 2011-06-11 at the Wayback Machine; Pakistan & Non-Aligned Movement Archived 2006-10-02 at the Wayback Machine, Board of Investment - Government of Pakistan, 2003
12) ↑ Grant, Cedric. "Equity in Third World Relations: a third world perspective." International Affairs 71, 3 (1995), 567-587.
13) भारत की गैर संरेखण नीति या गुट निरपेक्षता नीति
14) आधिकारिक जालस्थल: १४वां सम्मेलन — १४वां गुट-निरपेक्ष सम्मेलन, हवाना, ११-१६ सितंबर, २००६ (स्पेनिश)
15) गुट-निरपेक्ष आंदोलन — स्रोत स्थल
16) गुट-निरपेक्ष अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय संस्थान — गुट-निरपेक्ष आंदोलन हेतु थिंक टैंक
17) संयुक्त राष्ट्र महासचिव का गुट-निरपेक्ष आंदोलन को संदेश, २८ सितंबर, २००७
18) गुट-निरपेक्ष आंदोलन का सम्मेलन, सं.रा. के ५८वें जनरल असेंबली २६ नवंबर, २००३